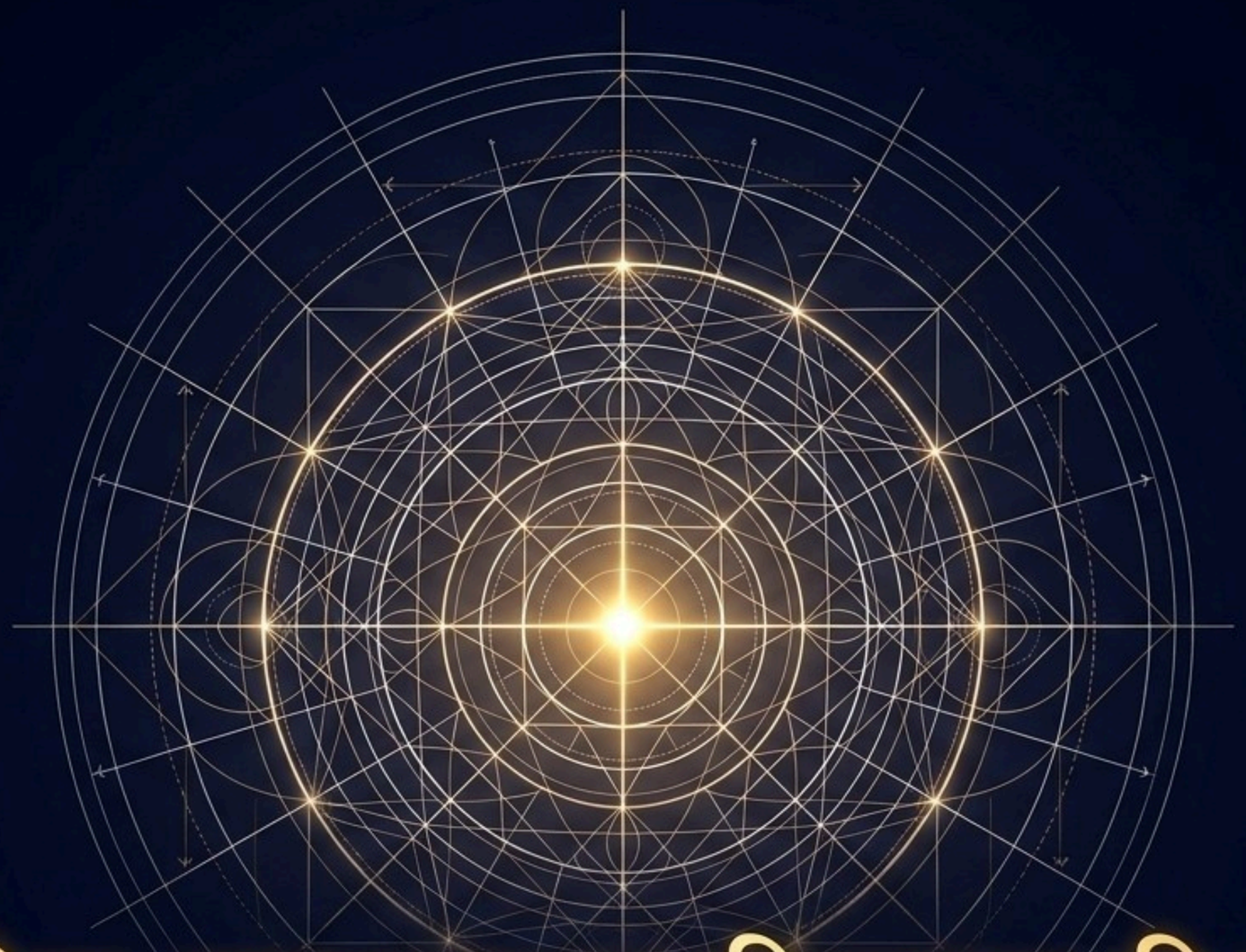

न्याय दीपिका: प्रत्यक्ष प्रमाण की स्पष्टता की वास्तुकला

जैन दर्शन में ज्ञान, प्रत्यक्ष और निर्मल प्रतिभास की मीमांसा

www.JainKosh.org

प्रमाण वह उपकरण है जो ज्ञान को पूर्णता और प्रामाणिकता प्रदान करता है।

मूल सूत्र	सम्यक् ज्ञानं प्रमाणम्
प्रमिति क्रिया प्रति यत करणम् तत् प्रमाणम् (जो प्रमिति क्रिया का साधकतम करण है, वह प्रमाण है)।	जैन दर्शन के अनुसार, सभी सम्यक् ज्ञान प्रमाण हैं।

⚠ चेतावनी (अव्याप्ति दोष) ⚠

यदि कोई भी सच्चा ज्ञान (जैसे- स्मृति) प्रमाण की परिभाषा से बाहर रह जाए, तो वह परिभाषा अधूरी मानी जाएगी।

www.JainKosh.org

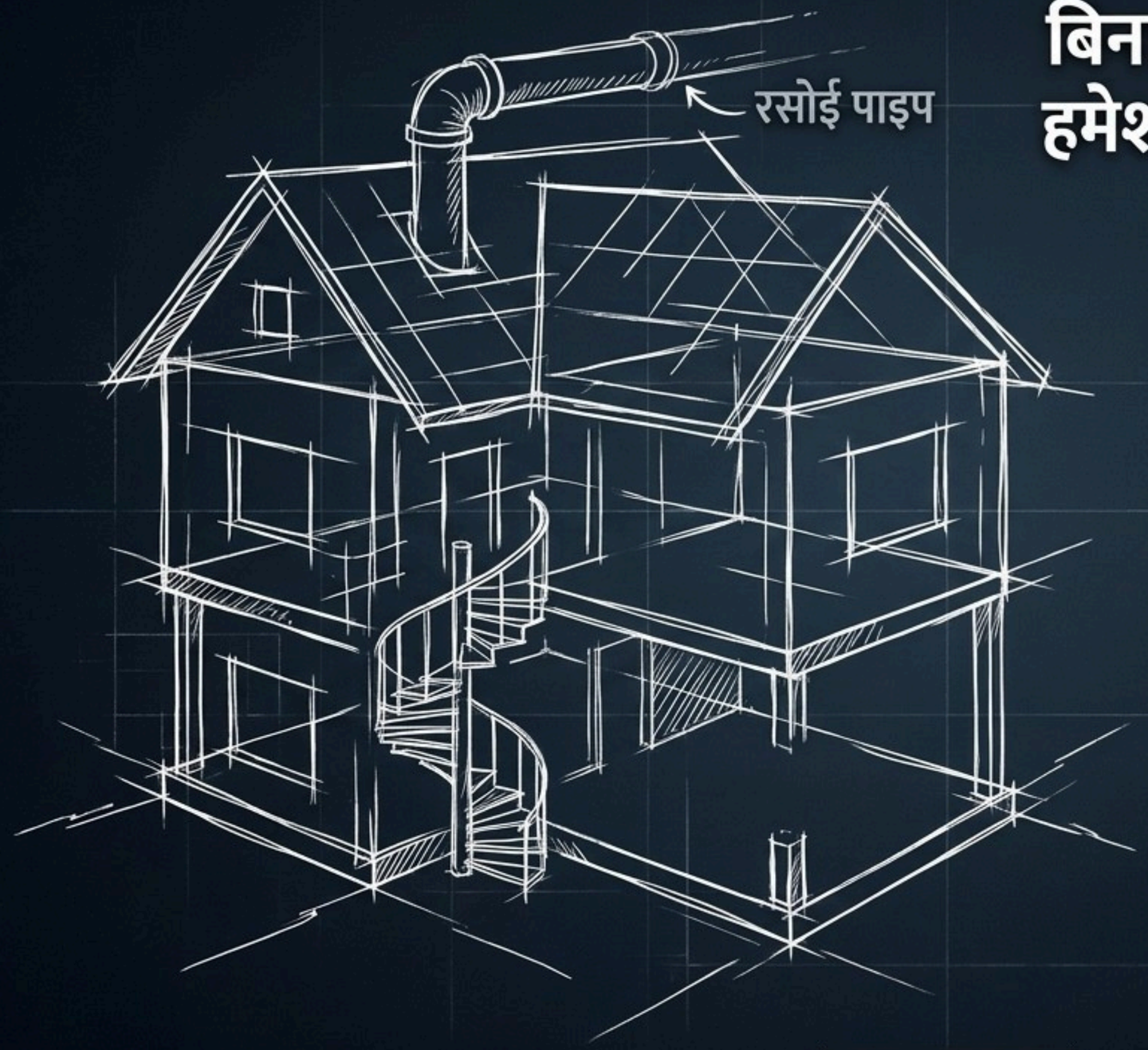

बिना स्पष्ट नक़्शे के निर्मित भवन में हमेशा कुछ महत्वपूर्ण छूट जाता है।

बिना नक़्शे का घर

जब आप बिना किसी पूर्व-योजना के निर्माण करते हैं, तो बाद में याद आता है कि खिड़कियाँ या सीढ़ियां तो बनाना भूल ही गए।

दार्शनिक समानता

यही स्थिति अन्य दार्शनिकों की रही। उन्होंने ज्ञान के प्रकारों को बिना किसी समग्र दृष्टि (Master Blueprint) के परिभाषित करना शुरू किया, जिससे उनका ज्ञान-शास्त्र अधूरा रह गया।

www.JainKosh.org

अन्य भारतीय दर्शनों ने ज्ञान के साधनों को एक के बाद एक जोड़कर एक अव्यवस्थित संरचना खड़ी की।

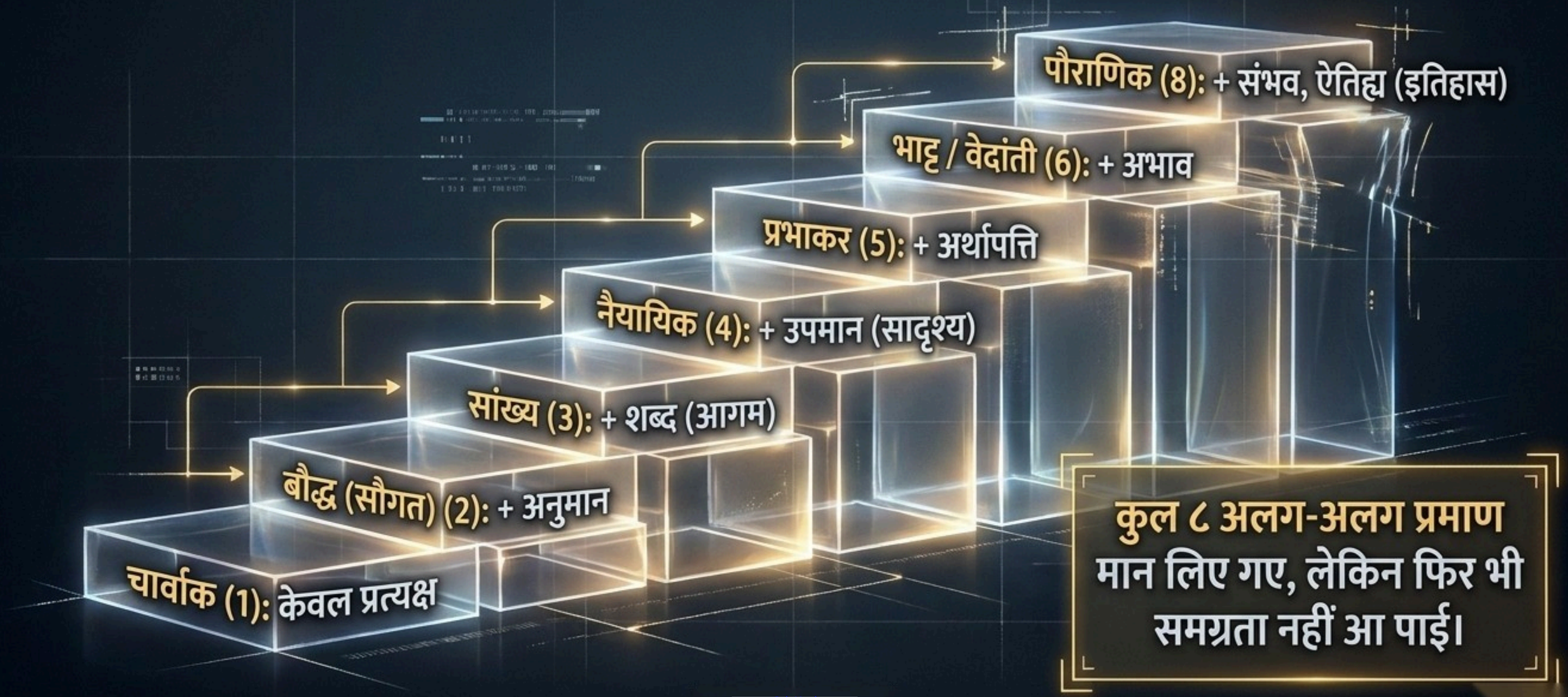

www.JainKosh.org

८ श्रेणियां जोड़ने के बावजूद, अन्य दर्शनों में ज्ञान के मूलभूत प्रकार छूट गए।

स्मृति (Memory)

'वह मंदिर है', 'वह पिता जी हैं'। यह सम्यक् ज्ञान है, लेकिन ८ प्रमाणों में इसका कोई स्थान नहीं।

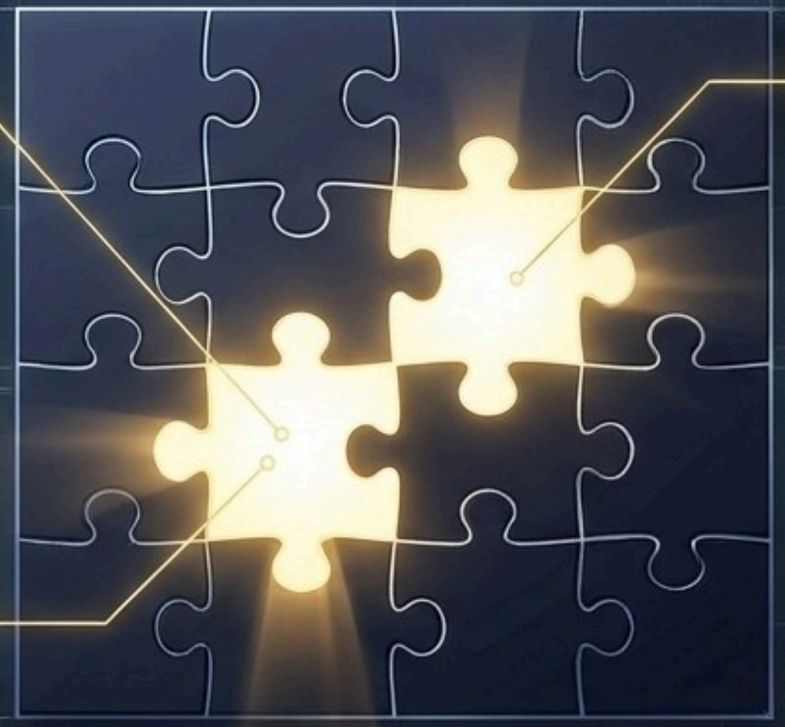

तर्क (Inductive Logic)

'जहाँ-जहाँ धुआं है, वहाँ-वहाँ अग्नि है' (अन्वय-व्यतिरेक व्याप्ति)। अनुमान का आधार होने पर भी इसे स्वतंत्र प्रमाण नहीं माना गया।

ज्ञान के स्वरूप का सही निर्णय न होने के कारण इन सभी दर्शनों में 'अव्याप्ति दोष' पाया जाता है।

www.JainKosh.org

जैन आचार्यों की पूर्णता: संपूर्ण ज्ञान-मीमांसा को केवल दो श्रेणियों के अंतर्गत समेट लिया गया।

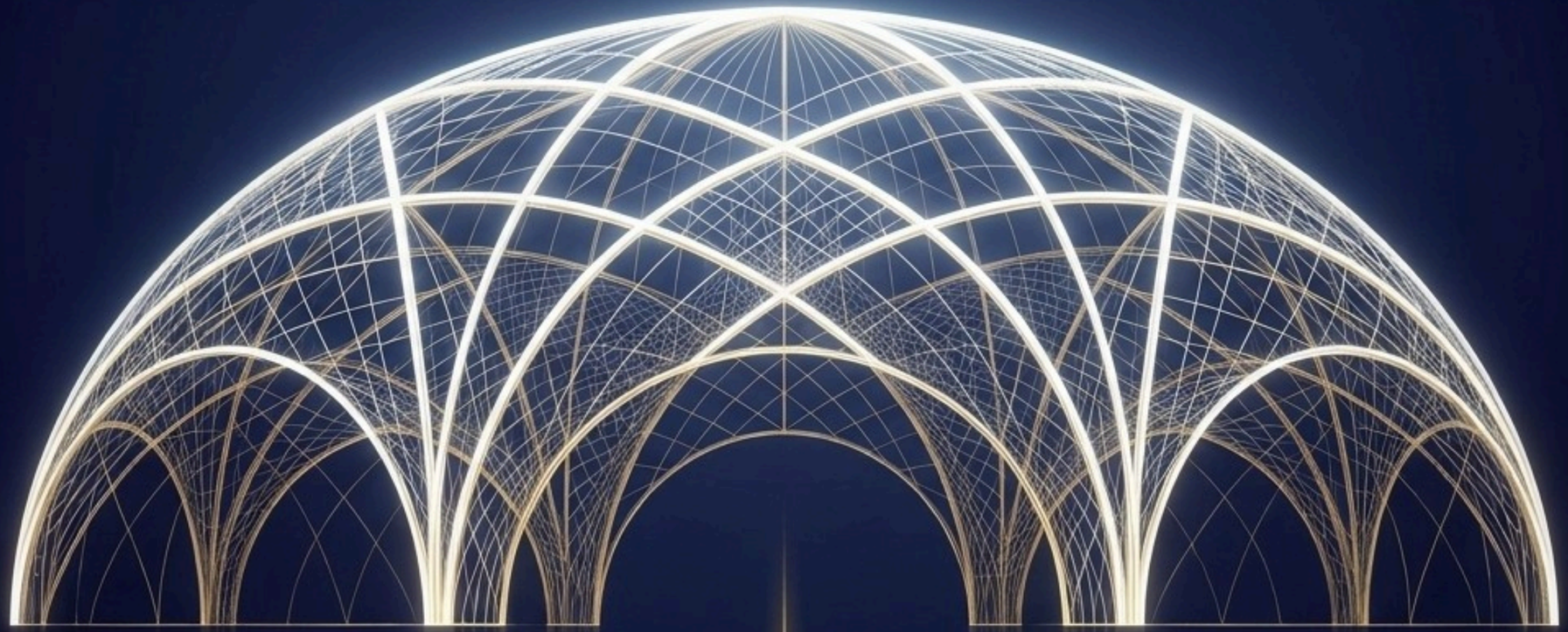

प्रत्यक्ष (Direct)

स्पष्ट और निर्मल ज्ञान।

परोक्ष (Indirect)

स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान, और आगम
(ये सभी सम्यक् ज्ञान इसके अंतर्गत पूर्णतः समाहित हो जाते हैं, कोई 'अव्याप्ति दोष' नहीं)।

यह केवल भेदों की सूची नहीं है, बल्कि ज्ञान के स्वरूप का सबसे गहरा और व्यवस्थित मास्टर-प्लान है।

www.JainKosh.org

प्रत्यक्ष का अर्थ केवल जानना नहीं, बल्कि निर्मल और स्पष्ट रूप से जानना है।

विशद प्रतिभासम् प्रत्यक्षम्

प्रतिभास

ज्ञान का जगमगाना, वस्तु का जानना या अनुभव में आना।

विशद

निर्मल, स्पष्ट, असंदिग्ध।

निष्कर्ष

जिस प्रमाण भूत ज्ञान का प्रतिभास (अनुभव) पूर्णतः निर्मल और स्पष्ट हो, वही प्रत्यक्ष है।

www.JainKosh.org

'विशदता' का अर्थ विस्तृत जानकारी (Details) नहीं, बल्कि अनुभव की निर्मलता (Clarity) है।

विस्तृत जानकारी ≠ प्रत्यक्ष (More Details ≠ Direct)

- श्रवणबेलगोला या कैलाश पर्वत का घंटों विस्तृत वर्णन सुनना।
- यह ज्ञान सत्य और विस्तृत हो सकता है, लेकिन यह अभी भी 'परोक्ष' (अविशद) है।

निर्मलता = प्रत्यक्ष (Purity/Clarity = Direct)

- पहाड़ पर जाकर स्वयं साक्षात दर्शन करना।
- यहाँ विवरण (details) नहीं बढ़े हैं, बल्कि जानने की 'स्पष्टता' और 'स्वच्छता' आ गई है। यही विशदता है।

www.JainKosh.org

रसगुल्ले का दृष्टांत: ज्ञान की निर्मलता साक्षात संवेदन से उत्पन्न होती है।

Step 1: शब्द (आगम) - अविशद

रसगुल्ले की मिठास, कोमलता, और सुगंध का विस्तृत वर्णन सुनना। (विस्तृत, पर परोक्ष)।

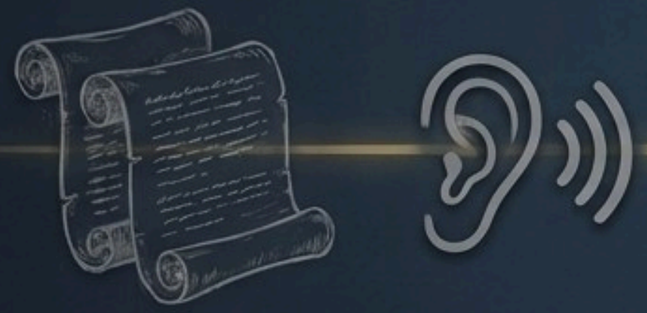

रसगुल्ले की मिठास, कोमलता, और सुगंध का विस्तृत वर्णन सुनना। (विस्तृत, पर परोक्ष)।

Step 2: अनुमान - अविशद

चित्र देखकर या किसी को खाते देखकर रसगुल्ले के स्वाद का लगाना। (सत्य, पर परोक्ष)।

चित्र देखकर या किसी को खाते देखकर रसगुल्ले के स्वाद का अनुमान लगाना। (सत्य, पर परोक्ष)।

Step 3: अनुभव (प्रत्यक्ष) - विशद

स्वयं रसगुल्ले को देखना और चखना। (यहाँ विवरण कम हो सकते हैं, पर ज्ञान में 'निर्मलता' आगद्ध है)।

स्वयं रसगुल्ले को देखना और चखना। (यहाँ विवरण कम हो सकते हैं, पर ज्ञान में 'निर्मलता' और 'अनुभव' आ गया है)।

www.JainKosh.org

विशदता (स्पष्टता) की उत्पत्ति के दो ही मूलभूत कारण हैं।

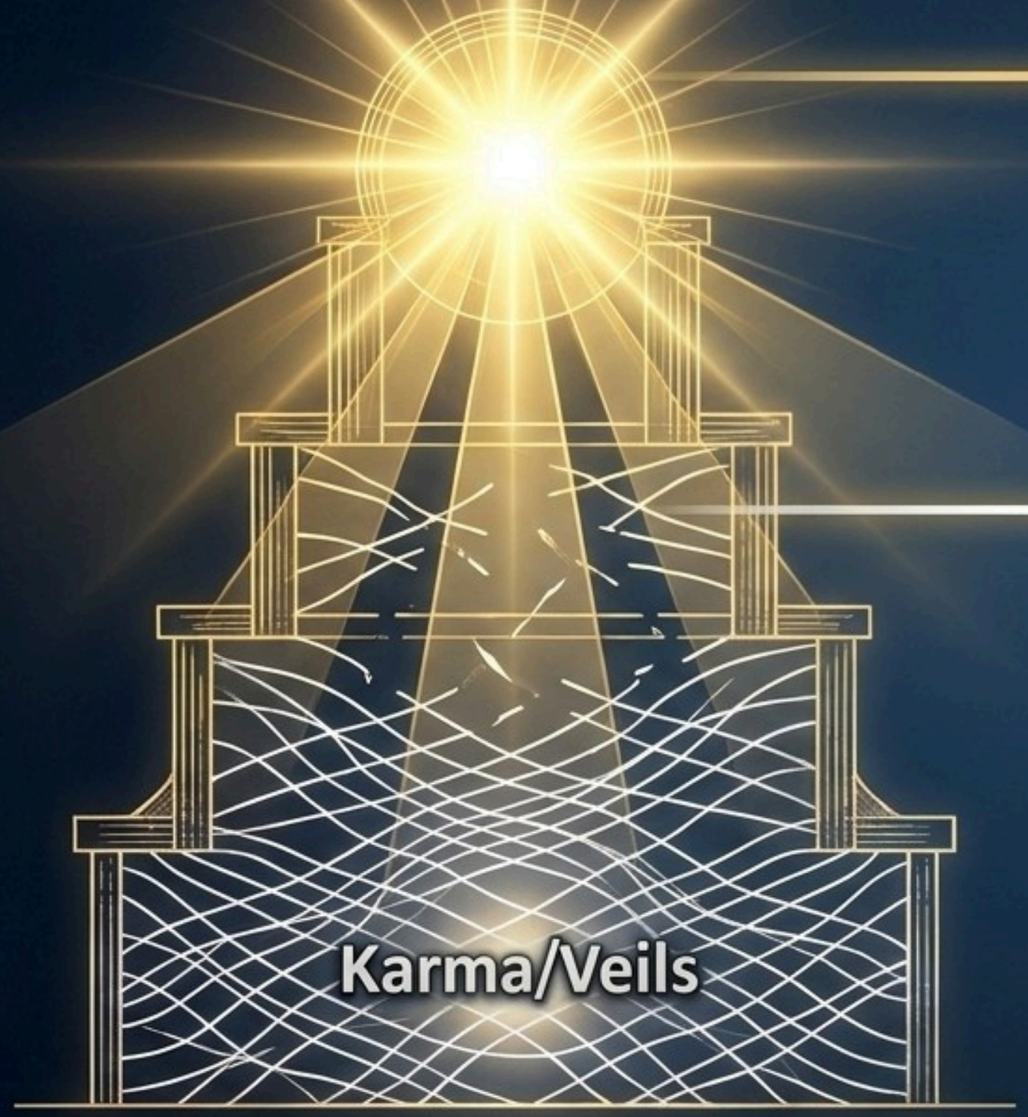

1. ज्ञानावरण का पूर्ण क्षय

जब ज्ञान को ढकने वाले कर्मों का पूरी तरह नाश हो जाता है (जैसे केवलज्ञान)। यह सर्व-जगत की पूर्ण निर्मलता है।

2. विशिष्ट क्षयोपशम

ज्ञान का आंशिक लेकिन विशिष्ट उघाड़ (जैसे अवधि ज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान, या हमारा साक्षात इंद्रिय अनुभव)।

आगम, शब्द, या अनुमान से उत्पन्न ज्ञान में यह 'अनुभव-सिद्ध निर्मलता' असंभव है।

www.JainKosh.org

प्रत्यक्ष के दो दृष्टिकोण: जैन न्याय ने आध्यात्मिक सत्य और व्यावहारिक तर्क दोनों को एक साथ साधा है।

www.JainKosh.org

पारमार्थिक प्रत्यक्ष: जो इंद्रिय और मन के बिना, सीधे आत्मा से उत्पन्न हो।

मूल सिद्धांत: अक्षम् प्रतिनियतम् प्रत्यक्षम् – जो सीधे आत्मा (अक्ष) के प्रति नियत हो।

स्वरूप: इस दृष्टिकोण से केवलज्ञान (सकल पारमार्थिक), अवधि ज्ञान, और मनःपर्यय ज्ञान ही सच्चे प्रत्यक्ष हैं।

निष्कर्ष: आगम की दृष्टि से हमारा इंद्रिय-ज्ञान 'परोक्ष' ही माना जाता है, क्योंकि इसमें इंद्रियों की पराधीनता है।

www.JainKosh.org

सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष: लोक-व्यवहार और न्याय के लिए इंद्रिय-ज्ञान को प्रत्यक्ष मानना।

सम्यक् व्यवहार

जगत में 'मैंने अपनी आँखों से देखा है' या 'कानों से सुना है' को ही प्रत्यक्ष (साक्षी) माना जाता है।

आचार्य अकलंकदेव का समन्वय

न्याय शास्त्र में तर्क और वाद-विवाद के लिए, इंद्रिय-ज्ञान में पाई जाने वाली 'स्पष्टता' (विशदता) के कारण इसे 'सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष' का दर्जा दिया गया।

अतिव्याप्ति दोष से मुक्ति

यह कोई नई परिभाषा नहीं है, बल्कि 'प्रमिति क्रिया' के साधन को ही व्यवस्थित करने का तरीका है।

www.JainKosh.org

निर्मल प्रतिभास ही प्रत्यक्ष है, और यह सत्य हमारे स्वयं के अनुभव से सिद्ध है।

- जैन न्याय ज्ञान की पूर्णता का ऐसा मास्टर-प्लान है जिसमें कोई भी ज्ञान (स्मृति, तर्क, प्रत्यक्ष) अनाथ नहीं रहता।
- विशदता (Clarity) सूचनाओं के ढेर से नहीं, बल्कि आत्मा की निर्मलता और प्रत्यक्ष संवेदन से आती है।

'निर्मल प्रतिभासत्वम् स्पष्टत्वम्...
स्वानुभव प्रसिद्धम् च एतत् सर्वस्य अपि परीक्षकस्य।'

(निर्मल प्रतिभास ही स्पष्टता है, और यह सभी परीक्षकों के लिए स्व-अनुभव से सिद्ध है)

— श्रीमद् वादिराज आचार्य (न्याय विनिश्चय विवरण)

www.JainKosh.org